प्रदान Pradan
PROFESSIONAL ASSISTANCE FOR DEVELOPMENT ACTION

लाख के हजार रंग

आजीविका के रूप में लाख को प्रोत्साहन

उम्मीद की डोर

सुशीला टूटी और उनके पति वाल्टर टूटी के लिए जिन्दगी एक कठिन संघर्ष का नाम है। सुशीला और वाल्टर झारखंड में खूंटी जिले के एक छोटे से गांव में रहते हैं। उनके गांव तक ना बिजली–पानी जैसी मूलभूत सुविधाएं पहुंची है, ना स्कूल और अस्पताल मौजूद है। यहां तक कि उनका घर भी गांव से बहुत दूर, पलाश और बेर के पेड़ों के झुरमुट के बीच बना है। लेकिन उन्हें अपने एकाकीपन से कोई शिकायत नहीं। बल्कि अपने पेड़ों और जंगल की बात करते–करते वाल्टर की आंखें चमक उठती हैं। यही जंगल और पेड़ पीढ़ियों से वाल्टर के परिवार के लिए आजीविका का स्त्रोत रहे हैं।

अपने पलाश, बेर और कुसुम के पेड़ों की बदौलत वाल्टर और सुशीला अपने परिवार के लिए एक उचित कमाई की व्यवस्था कर पाते हैं। ये दोनों सालों से इन पेड़ों पर लाख के कीड़े पालते रहे हैं, लेकिन अब लाख ने उनकी जिन्दगी को एक नई दिशा प्रदान की है। टूटी परिवार के लिए लाख की कमाई से बेहतर भविष्य का सपना साकार होने लगा है। 2007 में वाल्टर और सुशीला ने लाख बेचकर 35,000 रुपये कमाए। इस कमाई से टूटी दंपत्ति ने अपना घर बनवाया और अब अपने दोनों बच्चों को स्कूल भी भेज रहे हैं। इतना ही नहीं, वाल्टर ने अपने खेत के लिए बैलों का एक जोड़ा भी खरीदा है। लाख की कमाई से वाल्टर ने बंधक रखी अपनी जमीन को भी छुड़ाने में सफलता हासिल की है। इस उपलब्धि की चर्चा करते ही वाल्टर का चेहरा खिल उठता है। वाल्टर कहते हैं, "ये हमारी पुश्तैनी जमीन थी। खतियान में हमारे परिवार का अभी भी बंटवारा नहीं हुआ और एक साझा संपत्ति किसी भी परिवार की शान होती है। कुछ साल पहले हमने पैसे की तंगी के कारण जमीन को गिरवी रख दिया था। लेकिन लाख की वजह से इस साल हम उस जमीन को जोत पाए हैं।"

झारखंड के खूंटी जिले के कई लाख किसानों की जिन्दगी में लाख ऐसी ही नई उम्मीदों की किरणें लेकर आया है। सेतागढ़ा गांव की कृपा टूटी को लाख से 20,000 रुपये की आमदनी हुई है और वो अब अपनी बचत कुछ ही महीने पहले खुले बैंक खाते में डालना चाहती है। "मुसीबत के वक्त के लिए", बड़ी समझदारी के साथ कृपा कहती है। रायडीह की बहुरा देवी लाख से मिली आमदनी को अपने पति जगत महतो के साथ मिलकर धान की खेती में लगाना चाहती है। उनका इरादा इस पैसे से अपने लिए छह महीने का राशन खरीदने का भी है। उनके पड़ोस में रहनेवाली लक्ष्मी देवी अपने घर की मरम्मत करवाना चाहती हैं और अब उनका सपना अपनी बेटी को शहर के बड़े स्कूल में भेजने का है।

ऐसे खुशनुमा उदाहरण खूंटी में लाख की वापसी और अपनी आजीविका के लिए जंगल से जुड़े गरीब आदिवासी परिवारों के बेहतर भविष्य की उम्मीद के पुख्ता सबूत हैं। प्रदान ऐसे 2,500 परिवारों के सफर का साथी बनकर उन्हें गरीबी के जाल से निकालने की ओर अग्रसर है, ताकि ये परिवार भी आत्मनिर्भर होकर इज्जत और स्वावलंबन की जिन्दगी जी सकें।

गांव में रहनेवाले गरीब और पिछड़े परिवारों को बेहतर जीवन दिलाने में प्रयासरत स्वयंसेवी संस्थान प्रदान अर्थव्यवस्था के ऐसे क्षेत्रों की पहचान करने में यकीन करता है जिनमें एक बड़े स्तर पर गरीब परिवारों को आजीविका के दीर्घकालिक अवसर प्रदान करने की क्षमता होती है। लाख कई संभावनाओं वाला ऐसा ही एक क्षेत्र है जिसके जरिए हजारों परिवारों को आजीविका के अवसर उपलब्ध कराया जा सकता है।

क्या है लाख

लाख एक सूक्ष्म कीट से मिलनेवाला प्राकृतिक राल है। *केरिया लैका* यानि केर नाम के ये कीट पलाश, कुसुम और बेर जैसे कई तरह के पेड़ों पर पाले जाते हैं। ये कीट पोषण के लिए पेड़ों पर आश्रित होते हैं और टहनियों का रस चूसकर

बीहन लाख

बड़े होते है। पूरी तरह वयस्क हो चुका कीड़ा आकार में 0.6 मिलीमीटर लंबा और 0.25 मिलीमीटर चौड़ा होता है। आमतौर पर लाख के कीड़ों का एक वर्ष में दो जीवन-चक्र होता है।

पेड़ों की टहनियों पर जमनेवाली लाख की पपड़ी में शिशु कीटों को जन्म देने के लिए तैयार मादा कीट होती हैं। ऐसे लाख को बीहन लाख या *ब्रूड लाख* कहा जाता है। इसी बीहन लाख को पेड़ों पर चढ़ाया जाता है ताकि शिशु कीट पोषक वृक्षों की नई टहनियों पर बैठ सके। मादा कीट से निकलकर ये शिशु कीट टहनियों पर फैल जाते हैं और अपने लिए उपयुक्त स्थान चुनकर वहीं बैठ जाते हैं। दो-तीन दिनों में बैठ जाने के बाद ये कीट अपनी रक्षा के लिए एक प्रकार का तरल द्रव छोड़ते हैं, जो सूखने के बाद पपड़ी की तरह जम जाता है। लाख की फसल के पूरी तरह तैयार हो जाने के बाद इसी परत को टहनियों से खुरचकर निकाल दिया जाता है।

फसल की किस्म के आधार पर लाख की फसल के तैयार होने और उसकी कटाई का समय भी अलग-अलग होता है। लाख की कटाई अलग-अलग वजहों से भी की जाती है। जैसे, बीहन लाख की कटाई लाख के संचारण यानि अगली फसल की तैयारी के लिए करते हैं। आमतौर पर लाख के किसान बीहन लाख का इस्तेमाल कर अतिरिक्त फसल को आस-पास के गांवों में बेच देते हैं। प्रोसेसिंग के लिए बेचे जानेवाले लाख को *स्टिक लाख* या कच्चा लाख कहते हैं। छड़ीनुमा टहनियों से खुरचकर निकाले जाने की वजह से इस लाख को *स्टिक लाख* कहते हैं।

लाख के कीड़ों की दो नस्लें होती हैं – रंगीनी और कुसुमी। रंगीनी लाख के लिए पलाश और बेर प्रमुख पोषक वृक्ष हैं जबकि कुसुमी लाख के लिए कुसुम पेड़ मुख्य पोषक वृक्ष होता है। रंगीनी और कुसुमी लाख की दो-दो किस्में होती हैं जिनके कटाई के महीनों के आधार पर नाम रखे गए हैं।

बैसाखी और कतकी नाम से रंगीनी की दो फसलें होती हैं जिनके नाम उनकी कटाई के महीनों बैसाख (अप्रैल-मई) और कार्तिक (अक्टूबर-नवंबर) के आधार पर रखे गए हैं। उसी प्रकार जेठवी और अगहनी के नाम से कुसुमी लाख के भी दो प्रकार होते हैं।

कुसुमी रंग, राल की मात्रा और गुणवत्ता के आधार पर रंगीनी से बेहतर होती है और बाजार में कुसुमी की कीमत भी ज्यादा होती है। 2007-2008 में सबसे ज्यादा बैसाखी (38.66%) की पैदावर हुई। 27.39% के साथ कतकी फसल दूसरे स्थान पर रही जबकि 18.10% पैदावर के साथ अगहनी तीसरे स्थान पर और जेठवी (15.85%) चौथे स्थान पर रही।

फसलों की भागीदारी (2007-2008)

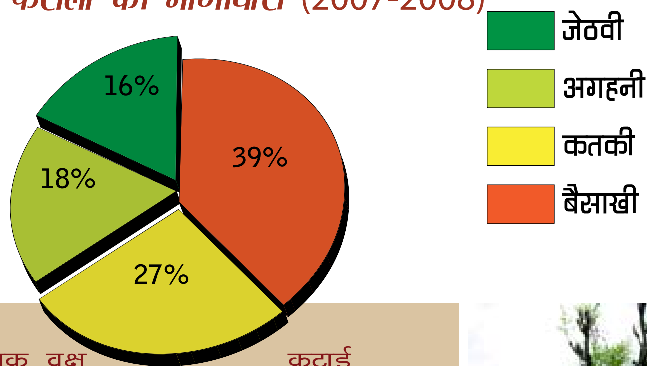

लाख के प्रकार	फसल चक्र	बीहन लाख का संचारण	पोषक वृक्ष	कटाई
रंगीनी	कतकी	जून-जुलाई	पलाश	अक्टूबर-नवंबर
रंगीनी	बैसाखी	अक्टूबर-नवंबर	पलाश, बेर	जून-जुलाई
कुसुमी	अगहनी	जून-जुलाई	कुसुम, सेमियालता, बेर	जनवरी-फरवरी
कुसुमी	जेठवी	जनवरी-फरवरी	कुसुम	जून-जुलाई

(स्त्रोत: भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान)

लाख की प्रोसेसिंग

स्टिक लाख को खुरचकर बहुत छोटे टुकड़ों में तोड़ लिया जाता है। कच्चे लाख को तोड़ने से उसकी सफाई करना आसान हो जाता है। टूटे हुए लाख को फिर छानकर उससे कंकड़-पत्थर, बालू और लकड़ी के टुकड़ों जैसी अशुद्धियों को निकाला जाता है। साफ किए हुए लाख को फिर धोकर साफ किया जाता है और उसे छांव में सुखाया जाता है। लाख की सफाई की इस प्रक्रिया में लाख की कोशिकाओं से बचे-खुचे लाख के कीड़ों को निकालने में सहूलियत होती है। लाख की सफाई के दौरान जो डाई या रंग निकलता है उसका इस्तेमाल सिल्क और ऊन को रंगने में किया जाता है। साफ किए हुए लाख को अच्छी तरह छानकर उससे हर प्रकार की अशुद्धि को अलग कर दिया जाता है। इस पूरी प्रक्रिया के बाद लाख बीज या छोटी गोलियों के रूप में निकलकर आता है, जिसकी वजह से इसे सीडलैक कहते हैं।

लाख का यही रूप शेलैक (चपड़ा) या बटन लाख बनाने के काम में आता है। इसी चपड़े में लाख, राल और रंग मौजूद होता है। रंग, लाख की मात्रा और बाकी गुणों के आधार पर लाख को अलग-अलग श्रेणियों में रखा जाता है। चपड़े या शेलैक के बाकी उत्पाद हैं डिवैक्स्ड शेलैक, ब्लीच्ड शेलैक और ऐलयूरिटिक एसिड। एलयूरिटिक एसिड का परफ्यूम, नेल-पालिश और लिपस्टिक जैसे साज-श्रृंगार के सामान बनाने में बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जाता है।

लाख का वर्गीकरण

कच्चा लाख	खुरचा हुआ लाख / स्टिक लाख
अर्धपरिष्कृत लाख (सेमी-रिफाइन्ड)	बीज लाख (सीडलैक)
परिष्कृत लाख (रिफाइन्ड)	चपड़ा (शेलैक), बटन लाख, मोमहीन रंगहीन लाख (डिवैक्स्ड डिकलराइज्ड), ब्लीच्ड लाख
अन्य उत्पाद (बाय-प्रोडक्ट)	लाख डाई और लाख वैक्स
लाख के अन्य अंग	एलयूरिटिक एसिड

इतिहास के पन्नों में लाख

लाख का इस्तेमाल सदियों से होता रहा है। अथर्वेद में नौ छंदों का एक पूरा अध्याय लाख को समर्पित है। कई ऐतिहासिक संदर्भों से ये भी पता चलता है कि लाख का इस्तेमाल औषधि के रूप में किया जाता था। महाभारत में जिस लक्षगृह की चर्चा मिलती है, वो भी लाख का ही बना हुआ था। मुगल बादशाह अकबर के जमाने में लाख का इस्तेमाल किसी सतह के लेप के तौर पर होता था। ईस्ट इंडिया कंपनी ने सत्रहवीं शताब्दी में लाख का व्यावसायीकरण शुरू किया। उन्नीसवीं शताब्दी तक आते-आते लाख निर्यात का एक अहम असबाब बन चुका था, जिसका इस्तेमाल ग्रामोफोन, वार्निश और पालिश बनाने में किया जाता था।

लाख के कई रूप

लाख का इस्तेमाल विभिन्न प्रकार की कोटिंग, चिपकानेवाले पदार्थ, बिजली के उपकरणों, खाने के सामान (चाकलेट, पेय पदार्थ), दवाओं और कास्मेटिक उद्योग में होता है। संतरों और सेब जैसे फलों की कोटिंग में भी लाख का इस्तेमाल होता है जिससे फलों को ज्यादा दिनों तक ताजा रखा जा सकता है और उन्हें चमक भी दी जाती है।

च्विंग गम और चाकलेटों में भी शेलैक का इस्तेमाल उसे बढ़िया चमक देता है और आर्द्रता से बचाता है। दवा उद्योग में चपड़े का इस्तेमाल टैबलेट की कोटिंग के लिए किया जाता है। चपड़े का इस्तेमाल मुद्रण के काम में आनेवाली स्याही या प्रिंटिंग इंक में भी किया जाता है। चपड़े के अन्य उपयोगों में अहम है बिजली के उपकरणों में स्पार्क प्लग की कोटिंग, जो अभ्रक और फाइबरग्लास को जोड़ने का काम करता है। खास रंगों के निर्माता इस प्राकृतिक राल का इस्तेमाल दीवारों के सीलर और लकड़ी के सामानों को चमक देने में भी करते हैं।

लाख के अन्य उपयोग

सतह लेप उद्योग (सर्फेस कोटिंग इंडस्ट्रीज)

- ताप और जलरोधन फ्रेंच पालिश (जैसे लकड़ी के फर्नीचर, रेडियो, टीवी कैबिनेट, संगीत वाद्य वगैरह पर आकर्षक चमक के लिए)
- पिक्चर वार्निश (तस्वीरों को धूल, गर्मी या और किसी तरह के नुकसान से बचाने के लिए)
- बुक वार्निश
- इमल्शन और आयल पेंट, सिंथेटिक इनैमल और स्याही

चिपकानेवाले पदार्थ के रूप में

- गाड़ियों के इंजन ठीक करने और उन्हें संभालकर रखने में
- सीलिंग वैक्स
- शीशा, धातु, प्लास्टिक, लकड़ी और कपड़े के लिए लाख सरेश (ग्लू) के तौर पर
- फाल्स सीलिंग बनाने में
- चूड़ियां बनाने में

बिजली उद्योग

- बिजली के मोटरों, ट्रांसफरमरों और दूसरे लैमिनेटेड सामानों के उत्पादन के लिए इन्स्युलेटिंग वार्निश के रूप में

अन्य उपयोग

- लाख डाई और वैक्स जैसे उत्पाद
- रंगीन और कीमती पत्थरों से गहने बनाने में
- पत्थरों को नुकीला बनाने और उनमें चमक लाने के लिए

मांग और आपूर्ति

लाख और लाख से बने उत्पादों की मांग दुनियाभर में मिलनेवाले लाख से कहीं ज्यादा है। भारत में औसतन सालाना 21,000 मेट्रिक टन लाख की पैदावार होती है जो दुनियाभर की मांग का करीब 55% है। लाख का उत्पादन करनेवाले देशों में थाईलैंड, इंडोनेशिया और चीन भी शामिल है। वैसे तो दुनिया के बाजार पर भारत और थाईलैंड का दबदबा है, लेकिन चीन भी इस क्षेत्र का एक अहम खिलाड़ी बनकर उभर रहा है। भारत अपने उत्पादन का 80% दुनियाभर में 75 देशों को निर्यात करता है। जिन देशों को भारत लाख निर्यात करता है उनमें जर्मनी, अमेरिका, इटली, ईजिप्ट और इंडोनेशिया प्रमुख हैं। वर्ष 2006-2007 में भारत ने 147.72 करोड़ रुपये की कीमत का कुल 7362.58 टन लाख का निर्यात किया।

(स्त्रोत: भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान)

भारत कई किस्मों के हाथ और मशीन से बने चपड़े का निर्यात करता है। लाख का कई रूपों में इस्तेमाल होता है क्योंकि ये हर तरह से पर्यावरण के लिए सुरक्षित उत्पाद है। दुनियाभर में जैसे-जैसे प्राकृतिक उत्पादों की मांग बढ़ती जा रही है (जैसे फलों और सब्जियों में कोटिंग और खाने के रंग में), लाख और लाख से बने उत्पादों की भी मांग भी उतनी ही तेजी से बढ़ रही है। बाजार के एक अनुमान के मुताबिक दुनिया में लाख की सालाना मांग करीब 40,000 मेट्रिक टन के आस-पास है, जबकि भारत, थाईलैंड और चीन मिलकर 32,000 मेट्रिक टन के आस-पास लाख का उत्पादन कर पाते हैं। मांग और आपूर्ति के बीच के इस अंतर से जाहिर है कि लाख के क्षेत्र में बड़ी संभावनाएं हैं।

भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान के एक अनुमान के मुताबिक लाख उद्योग को फिलहाल मौजूदा सालाना उत्पादन से 20% ज्यादा कच्चे लाख की जरूरत है। मांग और आपूर्ति के बीच का ये अंतर पाटा जाए तो एक लाख से ज्यादा लाख के किसानों को आजीविका उपलब्ध कराई जा सकती है।

कच्चा लाख

भारत में लाख उत्पादन

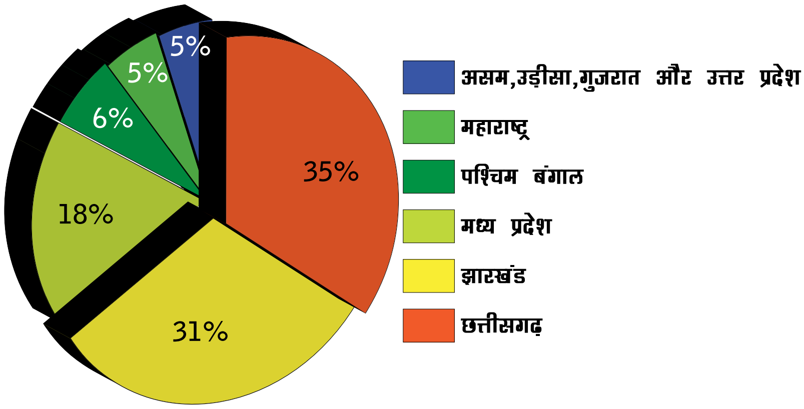

लाख ही क्यों

झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और उड़ीसा के जंगलों में रहनेवाले हजारों आदिवासी परिवारों के लिए लाख आजीविका एक पारंपरिक स्त्रोत रहा है। ये परिवार वैसे तो मुख्यतया कृषि पर आश्रित होते हैं, लेकिन खेती से ना उन्हें पूरे साल के लिए भोजन मिल पाता है और ना ही कमाई हो पाती है। जंगलों में बसे गांवों में रहनेवाले गरीब परिवारों को हमेशा से ऊसर और बंजर जमीन जैसी समस्या से जूझना पड़ा है। पूंजी का अभाव, सिंचाई की सुविधाओं का ना होना, छोटे टुकड़ों में बंटी जमीन और बाजार से दूरी इन किसानों की मुसीबतों में और इजाफा करती हैं और रोजी–रोटी की तलाश में इन्हें शहरों की ओर जाने को मजबूर करती हैं। ऐसे में उनके घरों के आस–पास उगनेवाले लाख के पोषक वृक्षों पर लाख के कीड़े पालकर ये किसान काफी हद तक अपने लिए आजीविका के दूसरे स्त्रोत का इंतजाम कर सकते हैं।

» लाख की खेती से मिलनेवाली आय उन महीनों में किसानों के काम आती है जब उनके पास अनाज की कमी होती है। लाख के कीड़ें का चक्र अक्तूबर से जुलाई तक का होता है जब किसानों के पास खेतों में काम नहीं रहता। किसान लाख से मिलनेवाले पैसे खेती के लिए बीज और खाद खरीदने में लगाते हैं। लाख से होनेवाली अतिरिक्त आय उनकी रोजमर्रा की जरूरतें भी पूरी करती हैं।

» झारखंड जैसे पठारों पर रहनेवाले आदिवासी किसान के लिए लाख की खेती आजीविका का पारंपरिक साधन है। पीढ़ी–दर–पीढ़ी ये किसान लाख की खेती का ज्ञान अगली पीढ़ी को सौंपते आ रहे हैं।

» लाख से अच्छी आमदनी होती है। एक हेक्टेयर पर लगे बेर के पेड़ों पर यदि कुसुमी लाख लगाया जाए तो उससे तीन से पांच लाख तक की सालाना आमदनी हो सकती है। झारखंड के ऐसे गांवों में, जहां लाख की खेती होती है, भारतीय राल एवं प्राकृतिक गोंद संस्थान द्वारा करवाए गए एक सर्वेक्षण के मुताबिक लाख से होनेवाली आमदनी धान से मिलनेवाली आय के बाद सबसे अधिक थी। 2003 में तो झारखंड में लाख की खेती से होनेवाली आय कृषि से होनेवाली कुल आय का 28 फीसदी थी। (स्त्रोत: स्कोप आफ लैक कल्टिवेशन इन एमप्लायमेंट जेनरेशन, के के कुमार)

» लाख की खेती के लिए किसी विशेष ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती। यहां तक कि समय भी खेती से कम लगता है। पोषक वृक्षों की काट–छांट, बीहन लाख चढ़ाने के लिए नायलान की जालियों का इस्तेमाल, इस्तेमाल हो चुके बीहन यानि फुंकी को पेड़ों से हटाना और फसल की सही तरीके से कटाई लाख के कीड़े पालने से जुड़े कुछ अहम काम हैं।

» लाख की खेती से ना सिर्फ हजारों किसानों को आय का एक जरिया मिलता है, जंगलों के संरक्षण में भी मदद मिलती है। इस प्रकार वातावरण के संरक्षण में लाख की खेती एक अहम भूमिका अदा कर सकती है।

» झारखंड का मौसम लाख सेक्टर के लिए उपयुक्त माना जाता है। वहां प्रकृति ने ही लाख के लाखों पोषक वृक्ष दिए हैं। साथ ही वहां की गर्मी भी बहुत तीखी नहीं होती। नतीजतन लाख की खेती के लिए ये जगह उत्तम मानी जाती है।

» लाख के क्षेत्र में उत्पादन के विभिन्न क्रियाकलापों के दौरान किसी तरह के लिंग–भेद की गुंजाईश नहीं होती। पेड़ों की काट–छांट से लेकर बीहन चढ़ाने, तैयार फसल को काटने और उसे बाजार में बेचने के उद्देश्य से ले जाना – ये सभी काम महिलाएं और पुरुष समान रूप से कर सकते हैं। लाख आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है क्योंकि यहां मालिक और सेवक के बीच का कोई भेद नहीं होता।

अहम बाधाएं

भारत और अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारी मांग के बावजूद देश में और खासकर झारखंड में लाख के उत्पादन में लगातार कमी आई है।

इसके निम्नलिखित मुख्य कारण हैं:

- कीमतों की अस्थिरता और स्थानीय बाजारों में स्टिक लाख की कीमतों का बार-बार गिरना। बाकी देशों से आनेवाली तैयार या प्रोसेस्ड लाख की मांग को पूरा करने के लिए भारत थाईलैंड से कच्चे लाख का आयात करता है। इस आयात की वजह से देश में कच्चे माल की आपूर्ति में इजाफा तो होता है लेकिन देश में कच्चे लाख की कीमतें घट जाती हैं।
- तकनीकी ज्ञान का किसानों तक ना पहुंच पाना एक बड़ी समस्या है। क्षेत्र में एक अध्ययन के दौरान प्रदान ने महसूस किया कि कई किसान अभी भी पारंपरिक तरीके से लाख की खेती करने में यकीन करते हैं जो बहुत फायदेमंद नहीं होता। भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान की प्रयोगशालाओं में होनेवाले प्रयोगों का जमीन से जुड़े किसानों तक ना पहुंच पाना एक बड़ी बाधा थी। लाख के किसान मौसम के मनमाने रवैए और कीड़े-मकोड़ों से होनेवाले नुकसान से भी परेशान रहते हैं, जिनकी वजह से लाख के कीड़ों की कई बार असमय मौत हो जाती है और फसल को काफी नुकसान पहुंचता है। इसकी वजह से कई बार किसानों को लगता है कि लाख की खेती से अनिश्चितताएं जुड़ी हुई हैं जिसमें निवेश की तुलना में आमदनी बहुत कम होती है। इस वजह से लाख के कई पुराने किसान लाख से और दूर जा रहे हैं।
- बीहन की कमी की वजह से किसानों के लिए लाख की खेती और चुनौतीपूर्ण हो जाती है। लाख उत्पादन के लिए बीज के तौर पर काम आनेवाले बीहन लाख का जीवन बहुत छोटा होता है और इसे संभालकर नहीं रखा जा सकता। इसलिए जब भी खराब मौसम की वजह से इलाके में लाख के उत्पादन में कमी आती है, तो अगले चक्र के लिए बीहन जुटाना मुश्किल हो जाता है। बीहन के नहीं मिलने का असर अगली फसल पर भी दिखाई देता है। किसानों के सामने चुनौतियां और बढ़ जाती हैं क्योंकि बड़े पैमाने पर लाख की खेती के लिए उन्हें पूंजी या औजार जैसी सुविधाएं मुहैया कराने के लिए उनको संस्थागत सहयोग नहीं मिलता।

आमतौर पर आर्थिक रूप से कमजोर आदिवासी किसान लाख की खेती करते हैं जो अपने उत्पाद बेचने के लिए किसानों या पैकारों पर निर्भर होते हैं। वैसे तो लाख से जुड़े सभी स्तरों पर अलग-अलग लोग खरीददार, प्रोसेसिंग करनेवाले और एजेंटों की हैसियत से विभिन्न कार्यों में लगे होते हैं। लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में सबसे ज्यादा लाख की खेती करनेवाला गरीब किसान ही पिसता है। लाख के किसानों से माल खरीदते वक्त एजेंट या बिचौलिए अक्सर नाप-तौल

लाख किसानों के सामने आनेवाली मुख्य बाधाएं

- पारंपरिक तरीके से खेती जिसमें कई खतरे हैं
- तकनीकी जानकारी का अभाव
- किसानों के लिए उत्तम गुणवत्ता वाले बीहन लाख की कमी
- उधार, बीमा या खेती से जुड़ी अन्य सुविधाओं की कमी
- मौसम जैसे प्राकृतिक खतरे
- माल की बिक्री के वक्त किसानों का शोषण

के वक्त किसानों की आंखों में धूल झोंककर उन्हें कम कीमतें देते हैं।

प्रोसेसिंग फैक्ट्रियों को कच्चा लाख बेचते वक्त उनकी कीमतें दुगुनी हो जाती हैं और इस तरह सारा लाभ बिचौलियों की जेबों में जाता है। ये बिचौलिए कच्चे लाख में मिट्टी मिलाकर उसमें राल की मात्रा को भी कम कर देते हैं। इससे ना किसानों को फायदा होता है, जिसे उसकी मेहनत के लिए कम पैसे मिलते हैं ना फैक्ट्री मालिकों को फायदा होता है, जिन्हें मिलावटी माल मिलता है।

मैजूदा सप्लाई चेन

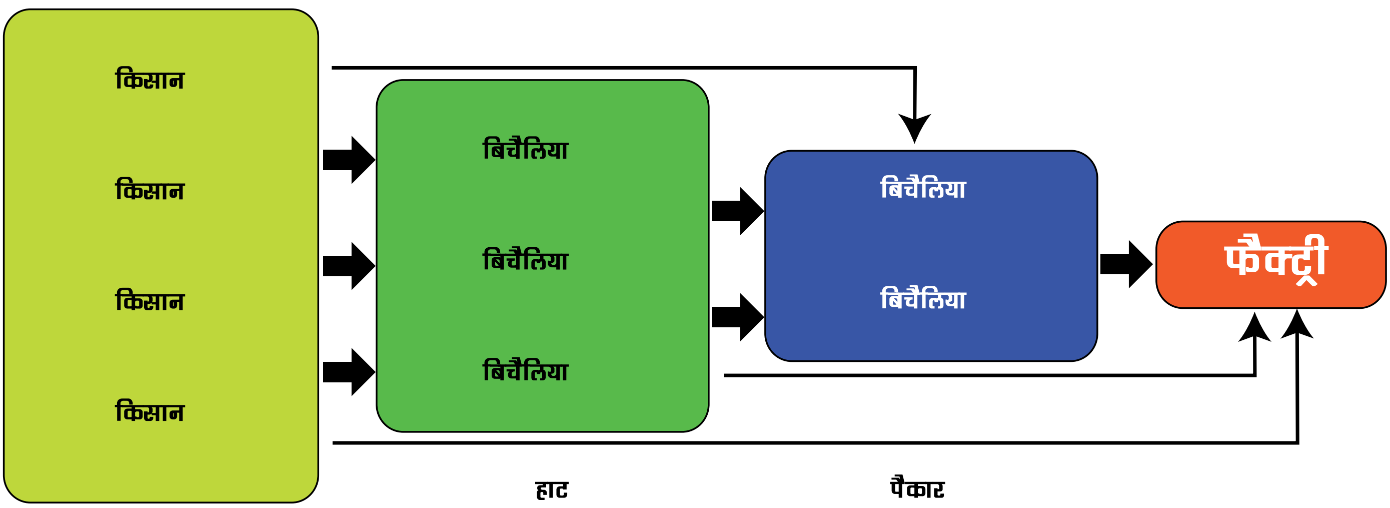

प्रदान की पहल

सेतागढ़ा गांव की राहिल टूटी एक लाख किसान हैं जिनके पास लाख के तकरीबन पचास पेड़ हैं। लेकिन राहिल बड़े उदास स्वर में कहती हैं, "हमारे पास लाख के कई पेड़ हैं लेकिन पिछले सालों में हमें इन पेड़ों से कोई आमदनी नहीं हुई है। लाख धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। हम चाहेंगे कि हम समस्याओं को समझकर लाख की खेती में और सुधार लाएं। लाख की कई अनिश्चितताओं और खतरों से परेशान राहिल जैसे कई किसान लाख की खेती से पीछे हटने लगे हैं।"

> "हम चाहेंगे कि हम समस्याओं को समझकर लाख की खेती में और सुधार लाएं।"
>
> - राहिल टूटी, लाख किसान

वैसे तो इस क्षेत्र से जुड़ी चुनौतियां कई हैं, लेकिन प्रदान हमेशा ग्रामीण समुदायों के ऐसे सशक्तिकरण में यकीन करता है जिससे उन्हें आजीविका के दीर्घकालिक अवसरों से जोड़ा जा सके। लाख उद्योग में दिखनेवाली संभावनाओं को देखते हुए प्रदान ने इस क्षेत्र में पहली बार खूंटी जिले के तोरपा ब्लाक में 2001 में पहल की। जो पहल 25 परिवारों से शुरू हुई उसमें आज 2,600 परिवार बेहतर जीवन के पथ पर अग्रसर हैं।

वर्ष	परिवारों की संख्या
2001–2002	25
2002–2003	303
2003–2004	743
2004–2005	864
2005–2006	1,212
2006–2007	1,914
2007–2008	2,659

लाख की खेती से जुड़ी अनिश्चितताओं को कम करने और उत्पादन को बढ़ाने के लिए प्रदान ने कई पहलुओं पर काम करना शुरू किया। इसके लिए खूंटी के गरीब किसानों को उनके प्राकृतिक संसाधनों और क्षमताओं के कुशल इस्तेमाल के लिए प्रेरित किया गया। प्रदान के बाकी सभी पहल की तरह यहां भी पहला कदम था महिलाओं के लिए स्वयंसहायता समूहों यानि महिला-मंडलों का गठन करना। एक बार जब स्वयंसहायता समूहों ने गांवों में अपनी पहचान स्थापित कर ली तो महिला मंडल के सदस्यों ने अपनी आजीविका के अवसरों को बेहतर बनाने के लिए मशक्कत शुरू की। ऐसे में लाख के क्षेत्र में पहल खूंटी और आस-पास के इलाकों के लिए सटीक साबित हुई जहां लाख वैसे भी कमाई का एक पारंपरिक जरिया था।

लाख के क्षेत्र में प्रदान की पहल के मुख्य बिंदु

- भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान के सहयोग से वहां की प्रयोगशालाओं में होनेवाले प्रयोगों को किसानों तक पहुंचाना
- लाख कीटों की बेवक्त मौत कम करने के लिए वैज्ञानिक तरीके से लाख की खेती को बढ़ावा देना
- किसानों को वैज्ञानिक तरीके से लाख की खेती के लिए प्रशिक्षित करना
- माल और आर्थिक सहयोग (जैसे उधार और बीमा) के लिए स्वयंसेवी समूहों, बैंकों और बीमा कंपनियों के साथ संपर्क स्थापित करना
- अलग-अलग पोषक वृक्षों पर लाख की खेती
- विभिन्न वृक्षों पर लाख के अलग-अलग चक्र लगाने का प्रयोग (जैसे बेर पर कुसुमी) जिससे सालभर लाख की खेती की जा सके
- लाख की खेती के लिए प्रशिक्षित लोकल रिसोर्स पर्सन यानी एलआरपी के तौर पर स्थानीय नौजवानों का जत्था तैयार करना
- बीहन की अधिकता वाले क्षेत्रों से बीहन की कमी वाले इलाकों तक बीहन की लगातार आपूर्ति

सहयोग ही मूलमंत्र

लाख के क्षेत्र में पहल प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान की उपयुक्त तकनीकी मदद और जमीनी स्तर पर किसानों को जोड़ने के प्रदान के अनुभव का संयोजन है। इस प्रोजेक्ट को झारखंड सरकार के समाज कल्याण विभाग का भी सहयोग मिला है। प्रदान ने लाख कार्यक्रम को और तेजी देने के लिए झारखंड सरकार के लिए एक मौलिक प्रोजेक्ट तैयार किया है। इस प्रोजेक्ट को भारत सरकार के योजना आयोग ने फंड किया है और कई अन्य स्वयंसेवी संस्थानों, जैसे नव भारत जागृति केन्द्र, कारा सोसाइटी फॉर रुरल एक्शन, नेटवर्क फॉर एन्टरप्राइज एंड डेवलपमेंट सपोर्ट और वर्ल्ड विजन, की मदद से प्रदान की ओर से इसे लागू किया जा रहा है। इस प्रोजेक्ट का मकसद झारखंड के 20,000 किसानों को तयशुदा चार सालों (2005-06 और 2009-10) के भीतर सहयोग देना है।

अनुदान और फंड का ब्योरा

वर्ष	किससे मिला	कितना मिला (रुपए में)	परिवारों की संख्या	स्थान
2003-04	भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान एवं सहकारिता विभाग	5,00,000	300	खूंटी
	सहकारिता विभाग	10,00,000	500	खूंटी
2004-05	सहकारिता विभाग	8,00,000	400	चाईबासा, गुमला, खूंटी
2005-06	कल्याण विभाग	7,40,000	500	खूंटी
2005-06 to 2009-10	योजना आयोग, भारत सरकारं	9.84 crores	20,000	झारखंड
	(प्रदान एवं बाकी स्वयंसेवी संस्थानों को)		परिवार(प्रदान पर 5,000 परिवारों की जिम्मेदारी)	

सहयोग

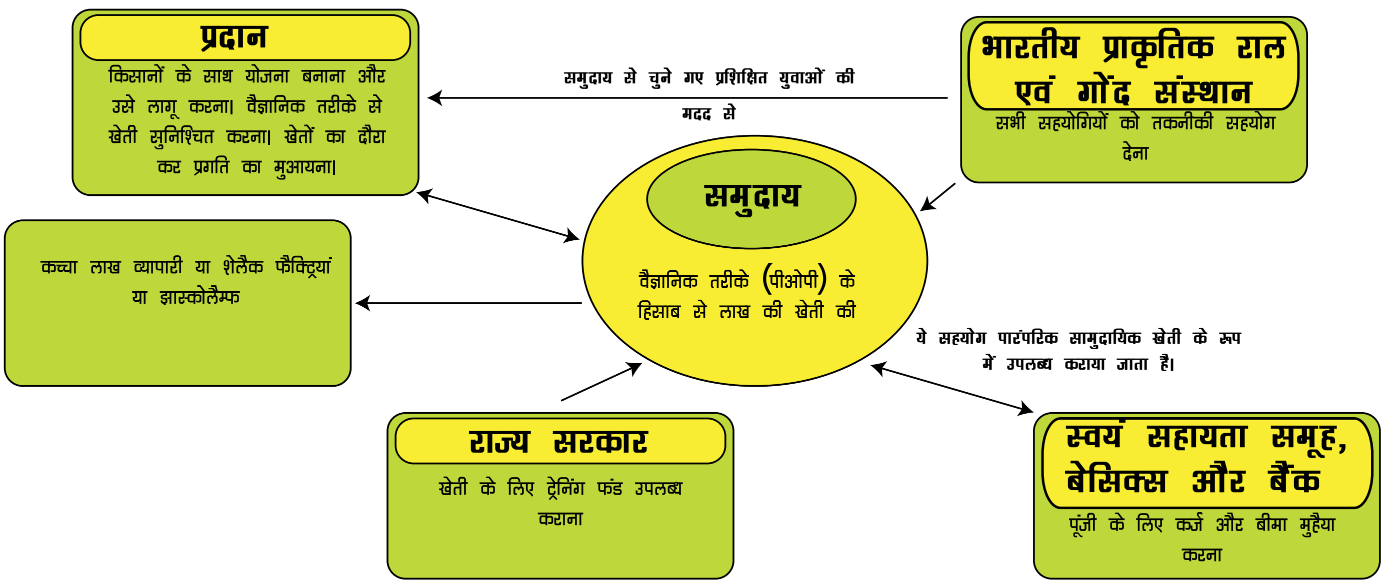

लाख की खेती: तब और अब

प्रदान ने जब वैज्ञानिक माध्यम से लाख की खेती के तरीकों और फायदों के बारे में गांववालों को बताना शुरू किया तो किसान इन नए विचारों से बहुत सहमत नहीं थे। किसानों की ये अनिच्छा और डर लाख के उत्पादन में होनेवाले उतार–चढ़ाव की वजह से थी जिससे उन्हें उचित आमदनी भी नहीं मिलती थी। अच्छे बीहन का अभाव भी उनकी परेशानी का दूसरा बड़ा कारण था। किसानों के साथ बारीकी से बातचीत करने के बाद प्रदान ने उनकी चिंता के हर मुद्दे की पहचान की और उनके हल के लिए रास्ता ढूंढने की कोशिश की।

सबसे पहले तो किसानों को खेती के नए तरीके अपनाने के लिए तैयार करना एक विशाल काम था। बिजली चमकने, कोहरा और प्रदूषण को लेकर गांववालों में कई तरह की भ्रांतियां थीं जिन्हें दूर करना आसान नहीं था। एक–एक किसान से बातचीत करने और गांवों में बैठक आयोजित करने के अलावा प्रदान ने नुक्कड़ नाटक किए ताकि उन्हें वैज्ञानिक तरीके से लाख की खेती के फायदे समझाए जा सके।

सुशीला टूटी ने अपने गांव में ऐसा ही एक नाटक देखा। सुशीला बताती हैं, "हम ये मानने के लिए तैयार ही नहीं थे कि पीढ़ियों से हम जिस तरीके से लाख की खेती करते आ रहे थे, उसके अलावा कुछ भी करने से हमें मदद मिलेगी। आखिर कीटनाशक छिड़कने से क्या मदद मिलती? पीढ़ी–दर–पीढ़ी हमें यही बताया जाता रहा है कि जबतक बीहन नहीं चढ़ जाए, हमें खाली पेट रहना चाहिए। या फिर ये कि बिजली गिरने से लाख के कीड़े अंधे हो जाते हैं! फिर हमने अपने गांव में नाटक देखा जिसने एक तरह से हमारी आंखें ही खोल दी। मैं अब अफवाहों पर भरोसा नहीं करती और प्रदान के दादा लोग ने जो तरीका सिखाया, वैसे ही खेती करती हूं। हम नतीजों से बहुत खुश हैं। जब भी मुझे किसी तरह का शक होता है, मैं दादा लोगों के पास ही जाती हूं।"

वैज्ञानिक खेती के अहम बिंदु	स्वस्थ पोषक वृक्षों की पहचान पेड़ के बड़े चंदवे के लिए छंटाई के बे. हतर तकनीक बीहन को कीड़ों, चूहों या पक्षियों से बचाने के लिए नायलान जाली बीहन चढ़ाने के बेहतर तरीके अपनाना जालियों का वृक्षों की डालियों पर घूर्णन कीड़ों के बैठ जाने के बाद फुंकी हटा देना नियमित सारणी के तहत कीटनाशक का छिड़काव नर कीटों के निकलने का ध्यान रखना, बड़े कीड़ों या चूहों के आक्रमण से कीटों की रक्षा कीटों के समुचित विकास पर नजर फसल काटने का उचित समय और उससे जुड़ी तकनीक

गुदुवा गांव की किसान सीसिलिया टूटी कहती हैं, "वैसे तो हमने हमेशा से लाख की खेती ही की है, लेकिन हमने कभी इससे पैसे नहीं बचाए। धान की खेती से भी हम बड़ी मुश्किल से छह महीने का खाना जुटा पाते थे। आज लाख से होनेवाली कमाई से हम सुकून और इज्जत से जी रहे हैं। पिछले साल हमने लाख से 24,000 रुपए कमाए। अब मेरा सपना अपने परिवार के लिए एक घर बनाना है।"

सीसिलिया की तरह ऐसे कई किसान हैं जिन्हें लाख के क्षेत्र में प्रदान की पहल से मदद मिली है। जरूरत पड़ने पर किसानों को हर कदम पर मार्गदर्शन और सहयोग दिया जाता रहा है। सबसे पहले, प्रदान ने भारतीय राल एवं गोंद संस्थान के विशेषज्ञों के साथ गांववालों को एक दिन के प्रशिक्षण का आयोजन किया, जिसमें किसानों को लाख की वैज्ञानिक तरीके से की जानेवाली खेती के बारे में जानकारी दी गई। प्रदान के कार्यकर्ताओं ने किसानों को एक पूरे फसल–चक्र की खेती के दौरान ही प्रशिक्षण देते हुए वैज्ञानिक खेती के हर कदम पर उनकी मदद की।

तकनीकी पहल

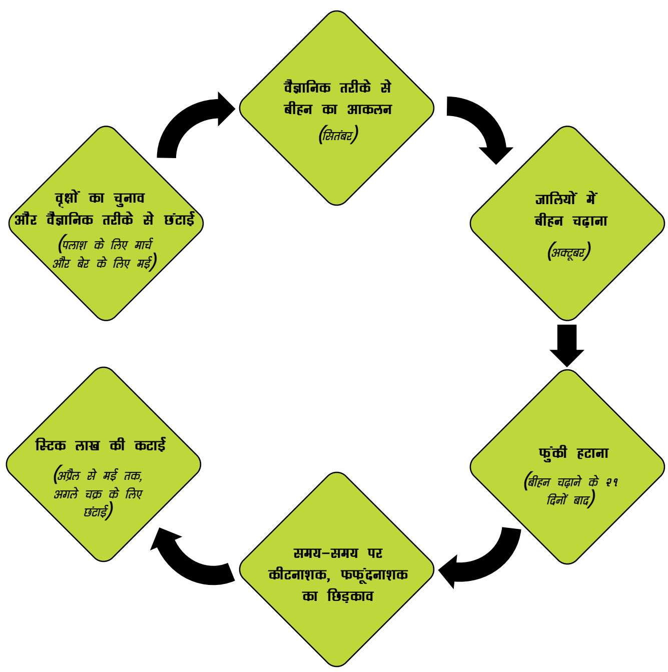

पोषक वृक्षों का चुनाव और छंटाई

लाख की वैज्ञानिक खेती स्वस्थ पोषक वृक्षों के चुनाव से शुरू होती है। वृक्षों का घना होना और पानी के किसी स्त्रोत के नजदीक होना या निचली जमीन पर होना कुछ अहम प्राथमिकताएं हैं। पेड़ों की टहनियों की छंटाई अगला कदम होता है जिससे पोषक वृक्षों में स्वस्थ और ताजा टहनियां निकलती हैं। वैज्ञानिक तरीके से छंटाई से लाख के कीड़ों को बैठने के लिए नई और अधिक संख्या में टहनियां मिलती हैं। छंटाई के लिए तेज धारवाली दौली का इस्तेमाल किया जाता है जिससे टहनियों को नीचे की तरफ छांटा जाता है। टेढ़ा करके नीचे की तरफ टहनियों को काटने से बारिश का पानी उनपर ठहरता नहीं है। पलाश और बेर के पेड़ों को बीहन चढ़ाने से छह महीने पहले काटा जाता है जबकि कुसुम के पेड़ की छंटाई बीहन चढ़ाने के अठारह महीने पहले की जाती है। पोषक वृक्षों को चुनने के बाद एक वैज्ञानिक अनुमान लगाया जाता है कि एक पेड़ पर कितने कीड़ों को पाला जा सकता है।

बीहन चढ़ाना

अगला कदम है अच्छी गुणवत्ता वाला बीहन खरीदना। बीहन लाख की खेती के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधन होता है। बीहन में लाख के कीड़ों की उम्र बहुत कम होती है, इसलिए उन्हें ज्यादा समय तक बचाकर नहीं रखा जा सकता है। बीहन को नायलान की जालियों में पेड़ों पर चढ़ाया जाता है। बीहन को जालियों में बंद करने से वैसे बड़े कीड़े उनमें ही रह जाते हैं, जो लाख के कीटों को नुकसान पहुंचा सकते हैं। नायलान जालियों से लाख के कीड़े निकलकर पेड़ों की टहनियों पर बैठ जाते हैं, लेकिन उनको नुकसान पहुंचानेवाले बड़े कीड़े जालियों में ही बंधे रह जाते हैं। प्रदान ने स्वयंसेवी समूहों के सदस्यों को बीहन को छोटे टुकड़ों में काटकर नायलान की जालियों में बांधने की ट्रेनिंग दी है। बीहन की गुणवत्ता की जांच करने के लिए 2005 में बीहन केंद्रों की शुरूआत की गई। हर बीहन केन्द्र 50 किसानों की जरूरत पूरी करता है और यहीं बीहन को काटकर उन्हें जालियों में बांधने का काम होता है।

प्रदान ने ये भी महसूस किया कि किसानों ने कभी भी ये नहीं सोचा कि पेड़ों पर बीहन को कैसे चढ़ाया जाए। अक्सर किसान किसी भी तरीके से बीहन पेड़ों पर चढ़ा दिया करते थे।

खूंटी के दुल्ली गांव की वर्जिनिया बड़ायुत सही तरीके से बीहन चढ़ाने के फायदे अब अच्छी तरह समझने लगी हैं। वो समझाती हैं, “नायलान की जालियों में बीहन चढ़ाने से सबसे पहले तो लाख के मादा कीटों से निकल रहे शिशु कीटों की दूसरे कीड़े-मकोड़ों से सुरक्षा होती है। हमें बीहन को सही तरीके से जालियों में बांधने की ट्रेनिंग दी गई है। उदाहरण के तौर पर, हम पांच मीटर लंबी टहनी के लिए हम 100 ग्राम बीहन को एक जाली में बांधकर चढ़ाते हैं। इससे हमें अंदाज मिलता है कि कितना बीहन चढ़ाया जा चुका है और इससे हर चक्र के लिए रूपांतरण दर का अनुमान लगाना आसान हो जाता है। इसका मतलब है, इससे एक इंच बीहन भी बर्बाद नहीं होता है। जहां तक हमारे फायदे का सवाल है, मैं भरोसे के साथ कह सकती हूं कि इस नई तकनीक से हमें दुगुना लाभ होने लगा है।" शिशु कीट पेड़ों की सभी टहनियों पर अच्छी तरह फैल जाएं, इसके लिए जालियों को एक टहनी से दूसरी टहनी पर घुमाया जाता है।

फुंकी हटाना

शिशु कीटों के पेड़ों पर बैठ जाने के बाद जो बीहन बच जाता है उसे फुंकी कहते हैं। हो सकता है कि फुंकी में नुकसान पहुंचाने वाले कीड़े भी मौजूद होते हैं, इसलिए उन्हें 21 दिनों के बाद पेड़ों पर से हटा देने की सलाह दी जाती है। फुंकी में लाख के राल की मात्रा भी होती है, जिसे बेचकर किसानों को बीहन की एक-चौथाई कीमत वापस मिल सकती है।

कीटनाशकों का छिड़काव

कीड़ों के विकास के शुरूआती दौर में उन्हें मरने से बचाने के लिए कीटनाशकों का छिड़काव बहुत जरूरी होता है। सही समय पर कीटनाशक का छिड़काव अस्सी प्रतिशत फसल को कीड़ों, फफूंदी और खराब मौसम से बचाता है। पेड़ों पर पहला छिड़काव बीहन चढ़ाने के 35 दिनों बाद होता है, जिसके बाद फुंकी उतारने के दसवें दिन अगला छिड़काव होता है। अगली बार बीहन चढ़ाने के 50-55 दिनों के बाद छिड़काव किया जाता है। यदि जरूरत पड़ी या जाड़े के दिनों में कोहरा रहा तो तीसरा और चौथा छिड़काव किया जाता है जिसे एसओएस छिड़काव कहते हैं। पहले दो छिड़काव में कीटनाशक और फफूंदनाशक, दोनों का इस्तेमाल होता है जबकि एसओएस छिड़काव में सिर्फ फफूंदनाशक डाला जाता है।

फूलमनी टूटी हर कदम पर इन तकनीकी निर्देशों का बड़ी गंभीरता से पालन करती हैं। वो मुस्कुराते हुए कहती हैं, "कुछ सालों पहले तक जिस पेड़ से हमें 10 किलो तक लाख मिलता था, उनसे अब 25-30 किलो तक लाख मिल जाता है। जालियों में बीहन बांधकर चढ़ाना, फुंकी हटाना और कीटनाशकों का छिड़काव करने में मेहनत तो थोड़ी-सी लगती है लेकिन हमें इसके नतीजे कितने अच्छे मिले हैं! और वैज्ञानिक तरीके से लाख की खेती की सबसे बड़ी खूबी है कि हम महिलाएं भी इस पूरी प्रक्रिया में अहम भूमिका निभाती हैं। हमें ट्रेनिंग दी जाती है, स्वयंसेवी समूहों से हमें कर्ज मिल जाता है। और हमें ये सोचकर बड़ी राहत मिलती है कि मुसीबत के वक्त हमारी मदद करने के लिए बहुत सारे लोग हैं।"

इस्तेमाल होनेवाले कीटनाशक और फफूंदनाशक

	कीटनाशक	फफूंदनाशक
रंगीनी चक्र के लिए	एंडोसल्फन 35 ईसी (मसलन, थियोडन) यूब्लेमा एमाबिलिस और स्यूडोहाईपोटोपा पल्वीरा के नियंत्रण के लिए, डाईक्लोरवोस 76 ईसी (मसलन, नूवान) क्रासोपा एसपीपी के नियंत्रण के लिए	कार्बेनडैजिम 50: डब्ल्यूपी (मसलन, बेनगार्ड)
कुसुमी चक्र के लिए	एंडोसल्फन 35 ईसी (मसलन, थियोडन) यूब्लेमा एमाबिलिस और स्यूडोहाईपोटोपा पल्वीरा के नियंत्रण के लिए , डाईक्लोरवोस 76 ईसी (मसलन, नूवान) क्रासोपा एसपीपी के नियंत्रण के लिए	कार्बेनडैजिम 50: डब्ल्यूपी (मसलन, बेनगार्ड)

उधार और बीमा

वैज्ञानिक तरीके से खेती करने के लिए निवेश की जरूरत पड़ती है और यहीं प्रदान द्वारा प्रोत्साहित स्वयंसेवी समूहों से किसानों को मदद मिलती है। बारोडीह गांव की सुषमा रुंडा तहे-दिल से अपने स्वयंसेवी समूह को धन्यवाद देती हैं। बीमारी या अन्य घरेलू जरूरत पड़ने पर हमेशा स्वयंसेवी समूह ने एक दोस्त की तरह उनकी मदद की है। सुषमा को जब बीहन खरीदने की जरूरत पड़ी तो एक बार फिर स्वयंसेवी समूह ने उनकी मदद की। सुषमा कहती हैं, "अगर मुझे अपने समूह से मदद ना मिली होती तो मैंने लाख की खेती छोड़ दी होती। साथ के किसानों और समूह से मिले कर्ज के दम पर मैंने एक बार फिर पूरे उत्साह के साथ लाख की खेती की, और अब नतीजे देखिए! पिछले साल 10 किलो बीहन खरीदने के लिए मैंने 600 रुपए उधार लिए, जिसे बेर के तीन पेड़ों पर चढ़ाया। नौ महीने बाद ना सिर्फ मैंने अपना कर्ज चुकाया, बल्कि 2,000 रुपए की बचत भी की।" उधार और बचत के ऐसे कई उदाहरण हैं, जिन्हें स्वयंसेवी समूहों की मदद से बैंकों और बीमा कंपनियों से जोड़ा गया है।

लाख का उत्पादन मौसम पर निर्भर करता है और मौसम में किसी भी तरह का बदलाव फसल को बुरी तरह प्रभावित कर सकता है। मौसम के ऐसे दुष्प्रभावों से निपटने के लिए प्रदान ने बेसिक्स के साथ मिलकर किसानों के लिए मौसम पर आधारित बीमा स्कीमों की सुविधा शुरू कराई है। आईसीआईसीआई-लॉम्बार्ड द्वारा लागू की जानेवाली ये स्कीम उस वक्त लाख के किसानों को आर्थिक मदद देती है, जब वे मौसम की मार से नुकसान झेल रहे होते हैं। इस स्कीम के तहत लाख के किसानों को गिरते या बढ़ते या तेजी से बदलते तापमान से फसल को होनेवाले नुकसान के बदले बीमा दिया जाता है।

दावा निपटाना एक आसान प्रक्रिया है क्योंकि किसानों को पैसे लेने के लिए किसी तरह का दावा जमा नहीं करना होता। आईसीआईसीआई लॉम्बार्ड किसानों को फसल-चक्र के आखिर में किसी भी असामान्य हालत के एवज में पैसे देता है। इसके लिए तीसरी पार्टी एजेंसी (थर्ड पार्टी एजेंसी) तापमान और बारिश का सर्वेक्षण कर आंकड़े जमा करती है। एक बार इन आंकड़ों को कंपनी सत्यापित कर दे तो दावों का भुगतान आंकड़े निकलने के 30 दिनों के भीतर कर दिया जाता है।

बीहन की समस्या का निदान

अच्छी गुणवत्ता वाले बीहन के अभाव में कई किसानों ने लाख की खेती पूरी तरह छोड़ दी है। सेतागढ़ा की बिलासी टूटी इस बात को पुख्ता करते हुए कहती हैं, "वैसे तो हम पीढ़ियों से लाख के कीड़े पालते आ रहे हैं, लेकिन मैंने और मेरे पति सुलेमान टूटी ने तय कर लिया था कि अब लाख में पैसे नहीं लगाएंगे। कुछ दिन पहले तक लाख हमारे लिए पैसे कमाने का सबसे मुश्किल विकल्प था। मौसम साथ नहीं देता, यहां तक कि गांव में बीहन भी नहीं मिलता था। कहीं और से बीहन लाने का मतलब था पैसे और समय, दोनों लगाना। 2003 में तो खराब मौसम के कारण पूरी खूंटी में कहीं भी बीहन उपलब्ध नहीं था। दस पेड़ पर भी बीहन चढ़ाने के लिए हमें सिमडेगा से बीहन लाना पड़ता, मतलब 3000 रुपए का खर्च। आने-जाने का खर्चा अलग से। फिर हमें ये भी पता नहीं था कि बीहन होगा कैसा। हम ऐसे किसी काम में पैसे नहीं लगाना चाहते थे जिसमें हमें ये भी नहीं मालूम था कि इसका कोई फायदा होगा भी या नहीं।"

प्रदान ने महसूस किया कि बिलासी जैसे किसानों की मदद करनी है तो अच्छी गुणवत्ता वाले बीहन की आपूर्ति को स्थिर बनाना होगा। इससे लाख उत्पादन को भी स्थिरता मिलेगी। बीहन उपलब्ध कराने के लिए प्रदान ने दो-आयामी रणनीति अपनाई। सबसे पहले बीहन की अत्यधिक उपलब्धता वाले इलाकों से वैसे इलाकों तक बीहन लाया गया जहां इसकी कमी थी। कोशिश की गई कि बाजार से कम कीमतों पर किसानों को बीहन दिया जाए। ये काम उत्पादक संस्थानों के माध्यम से किया गया, जहां ऐसी आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाता है। बिलासी अब अपने समूह के जरिए बीहन खरीदती है। पिछले साल उसने 600 रुपए में 10 किलो बीहन खरीदा और बीहन की गुणवत्ता से बहुत संतुष्ट थी।

दूसरी रणनीति थी किसानों को अपना बीहन पैदा करने के लिए प्रोत्साहित करना, जिससे उन्हें बीहन के लिए बाजार की अनिश्चित आपूर्ति पर निर्भर ना रहना पड़े। बीहन के लिए लाख के कीड़े अक्सर पलाश के पेड़ पर पाले जाते हैं। पलाश के पेड़ झारखंड के जंगलों में बड़ी संख्या में मौजूद हैं। भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान के मार्गदर्शन में प्रदान ने कूप प्रणाली के तहत बेर के पेड़ों पर बीहन लगाने में मदद की है।

कूप प्रणाली क्या है?

अपने घने चंदवे की वजह से बेर के पेड़ में छंटाई लायक कई टहनियां होती हैं। पेड़ के ऊपरी हिस्से में लाख की पपड़ियां कम होती हैं। रंगीनी फसल मई तक तैयार हो जाती है और जून-जुलाई तक अंडे फूटने लगते हैं। अगर फसल को अगले दो महीनों तक छोड़ दिया जाए तो वही फसल बीहन के रूप में तैयार हो जाएगी। कूप प्रणाली में कम लाख की पपड़ियों वाली टहनियों को छोड़ दिया जाता है जबकि बाकी पेड़ को अगले फसल के लिए तैयार करते हुए छांट दिया जाता है। इन बची-खुची टहनियों पर जून-जुलाई के महीने में छोटे-छोटे कीड़े निकलते हैं जिन्हें बीहन के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है।

बीहन की कमी से निपटने के लिए प्रदान की कोशिश है कि लाख के कीड़े पालने को सालाना गतिविधि बनाया जाए। लाख के कीड़े पालने के लिए प्रदान ने तीन मॉडल को आधार मानकर पहल शुरु की है:

» बेर और पलाश जैसे पारंपरिक पोषक वृक्षों पर रंगीनी
» कुसुम और बेर जैसे पारंपरिक पोषक वृक्षों पर कुसुमी
» सेमियालता जैसी झाड़ियों पर कुसुमी

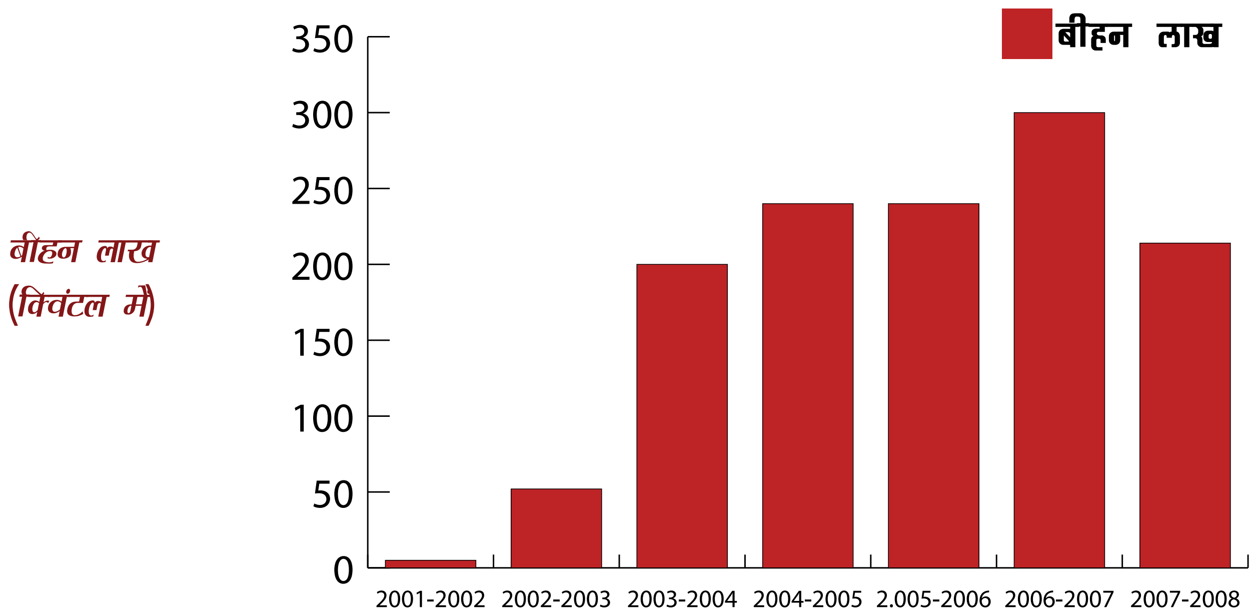

इकाई पर लागत

मॉडल नं.	लाख प्रोटोटाईप नाम	प्रति यूनिट पर लाभ	प्रति यूनिट पर वार्षिक लाभ की क्षमता	प्रति यूनिट लागत (रुपए में)	प्रति यूनिट पांच किसानों के बीच औजारों पर खर्च (रुपए में)	मजदूरी पर शुद्ध लाभ (रुपए में)
1	बेर/पलाश जैसे पारंपरिक पोषक वृक्षों पर रंगीनी	1,800	5,400	890	9,000	165
2	कुसुम/बेर जैसे पारंपरिक पोषक वृक्षों, पर कुसुमी	2,500	7,500	2,240	9,000	230
3	पोषक झाड़ियों पर कुसुमी लाख (जैसे सिंची जानेवाली जमीन पर सेमियालता)	16,000	16,000	3,830	11,932	545

पारंपरिक पोषक वृक्षों पर रंगीनी

इस पहल की शुरूआत से ही प्रदान लाख के रंगीनी चक्र की खेती को प्रोत्साहित करता रहा है। रंगीनी का फसल चक्र कुसुमी से छोटा होता है। औसतन, रंगीनी चक्र को पूरा होने में छह महीने लगता है जबकि कुसुमी के लिए छंटाई से लेकर बीहन चढ़ाने तक अठारह महीने तक का समय लगता है।

रंगीनी लाख में लागत

लागत

सामान	इकाई	मात्रा	दर	कुल (रुपए में)
बीहन लाख (15 किलो)	बीहन	15.00	30.00	450.00
5 रुपए प्रति पेड़ की दर से 7 पेड़ों पर 4 बार स्प्रे (35 रुपए)	स्प्रे	4.00	35.00	140.00
नायलॉन नेट जलियां/दो रुपए की दर से तीन चक्र (0.67 रुपए)	नेट जालियां	150.00	0.67	101.00
				691.00

आमदनी

सामान	इकाई	मात्रा	दर	कुल (रुपए में)
फुंकी लाख	लाख	3.00	55.00	165.00
छिला हुआ लाख (बीहन का दुगुना)	लाख	37.50	55.00	2,062.50
				2,227.50

लाभ	1,537.00
(तकरीबन)	1,500.00
दिहाड़ी (प्रति दिन)	153.70

पारंपरिक वृक्षों पर कुसुमी

लाख के कीड़े सालभर पालने के लिए किसानों को कुसुम और बेर के पेड़ों पर भी कीड़े पालने के लिए प्रोत्साहित किया गया। मौजूदा रंगीनी चक्र की तुलना में कुसुमी के इस नए चक्र से बेहतर नतीजे मिले। पहले जहां बीहन से छिले हुए लाख का रूपांतरण दर 1 : 2.5 था, वहीं कुसुमी में ये दुगुनी दर से 1 : 4 से रूपांतरित हुआ। अब तकरीबन 750 किसान बेर पर कुसुमी लगा रहे हैं और नतीजे से बेहद खुश हैं।

भारतीय राल एवं गोंद संस्थान के वैज्ञानिकों और किसानों के साथ मिलकर प्रदान ने बेर के पेड़ों पर कुसुमी लगाकर उसके फायदों को देखा-परखा। फिर 2006 में 54 किसानों के साथ मिलकर खेतों में प्रयोग शुरू किया गया जिसके नतीजे उम्मीद से भी बेहतर निकले। उस साल बीहन से आठ गुना ज्यादा लाख किसानों को मिला था। इस प्रयोग ने हजारों आदिवासी किसानों के लिए अवसर के नए दरवाजे खोल दिए। अपने सहयोगी किसानों की देखा-देखी 1500 किसानों ने बेर के पेड़ों पर लाख की खेती शुरू कर दी है।

बेर पर कुसुमी

कुसुमी लाख में लागत

लागत

सामान	इकाई	मात्रा	दर	कुल (रुपए में)
बीहन लाख (15 किलो)	बीहन	15.00	50.00	750.00
5 रुपए प्रति पेड़ की दर से 7 पेड़ों पर 4 बार स्प्रे	स्प्रे	4.00	35.00	140.00
नायलान नेट जालियां/दो रुपए की दर से तीन चक्र (0.67 रुपए)	नेट जालियां	150.00	0.67	101.50
				990.50

आमदनी

सामान	इकाई	मात्रा	दर	कुल (रुपए में)
फुंकी लाख	लाख	3.00	85.00	255.00
छिला हुआ लाख (बीहन का ढाई गुना)	लाख	45.00	85.00	3,825.00
				4,080.00

लाभ	3,090.00
तकरीबन	3,000.00
दिहाड़ी (प्रति दिन)	309.00

बीहन के लिए सेमियालता लगाना

बेर, पलाश और कुसुम लाख के तीन मुख्य पोषक वृक्ष हैं। कई बार ये पेड़ गांवों से बाहर, जंगलों में फैले होते हैं। गांवों से दूरी और पेड़ों के बड़े आकार की वजह से किसान इन पेड़ों पर लाख के कीड़े लगाने से घबराते हैं। चित्रामू गांव के सुंदर पाहन के पास लाख के 50 से ज्यादा पोषक वृक्ष हैं, लेकिन एक फसल चक्र में वे कभी 8-10 से ज्यादा पेड़ों पर बीहन नहीं चढ़ा पाते थे। सुंदर कहते हैं, "मैं एक ही वक्त पर इतने सारे पेड़ों की देख-भाल कैसे करता आखिर?" इसलिए सुंदर को सेमियालता के बारे में बताना और उसपर लाख के कीड़े पालने के लिए तैयार करना बिल्कुल मुश्किल नहीं था।

फ्लेमेंगिया सेमियालता ऐसा पोषक पौधा है जिसे अपने खेतों में ही लगाया जा सकता है, और पौधे लगने के एक साल बाद ही बीहन चढ़ाने के लिए तैयार हो जाते हैं। सेमियालता की औसत ऊंचाई 7 फुट होती है और ये पौधा झाड़ियों की तरह लगता है। सेमियालता के पौधों के बीच सब्जियां लगाकर ना सिर्फ आमदनी का अतिरिक्त जरिया तैयार किया जा सकता है, बल्कि इन खेतों की रखवाली और देख-रेख भी आसान होती है।

प्रदान ने सुंदर जैसे 20 प्रगतिशील किसानों को 2006-2007 में सेमियालता लगाने में मदद की, और अब कई किसान हैं जो इस समूह में शामिल होना चाहते हैं। सुंदर कहते हैं, "मुझे सेमियालता लगाए एक ही साल हुआ है। लेकिन पिछली बार मैंने इन पौधों से अपने लिए बीहन निकाल लिया। इतना ही नहीं सात किलो बीहन बेचकर मैंने 10,000 रुपए भी कमाए। अभी तो मैंने अपने एक एकड़ जमीन के दसवें हिस्से में ही सेमियालता लगाया है। लेकिन मुझे पूरी उम्मीद है कि सेमियालता लगाकर लाख की खेती के तरीके को नया मोड़ दिया जा सकता है।"

देवगांव की असरिता होरो भी कुछ ऐसा ही सोचती हैं। उन्होंने अपने घर के बगीचे में ही सेमियालता लगा रखा है, और अब गांव के दूसरे किसानों को सेमियालता लगाने में मदद कर रही हैं। लाख के ये किसान अब धीरे-धीरे समझने लगे हैं कि सेमियालता से लाख उत्पादन में स्थिरता लाई जा सकती है जिससे झारखंड के आदिवासी किसानों को आजीविका का एक उत्कृष्ट साधन मिल सकता है। सेमियालता पर लाख के कीड़े पालने में मिली सफलता से लाख कार्यक्रम को उल्लेखनीय सफलता मिली है क्योंकि इससे खतरे कम हुए हैं, कम वक्त में बेहतर फसल हुई है और खाली जमीन की उत्पादकता भी बढ़ी है। इससे जमीन के छोटे टुकड़ों वाले किसानों की आमदनी में भी वृद्धि हुई है।

औसत रूपांतरण दर

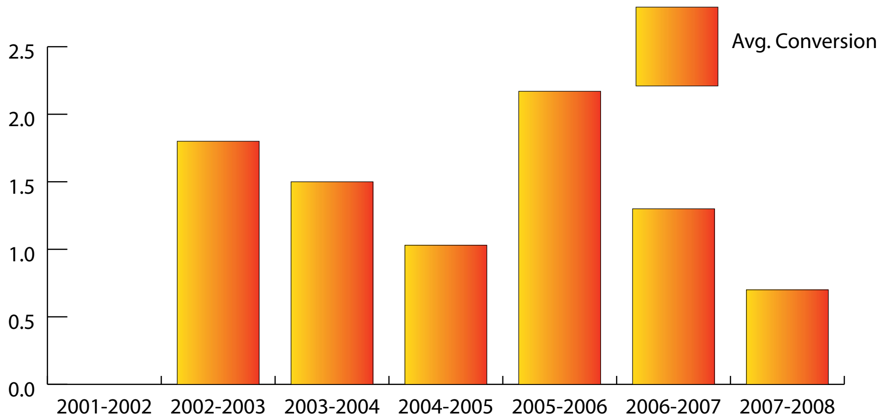

सेमियालता पर कुसुमी लाख की लागत

लागत (15 डेसिमल पर)

सामान	इकाई	मात्रा	दर	कुल (रुपए)
बीहन लाख 18 किलो (30ग्राम x 600 झाड़ी)	बीहन	12.00	50.00	600.00
600 झाड़ियों पर 4 स्प्रेयिंग / 12 पैसे प्रति झाड़ी स्प्रेयिंग	स्प्रेयिंग	4.00	72.00	288.00
नायलान नेट जालियां/1.5 रुपए की दर से तीन चक्र (0.50 रुपए)	नेट जालियां	600.00	0.50	300.00
				1,188.00

आमदनी

सामान	इकाई	मात्रा	दर	कुल (रुपए)
फुंकी लाख	लाख	4.00	85.00	340.00
छिला हुआ लाख (बीहन का 4 गुना)	लाख	72.00	120.00	5,100.00
				5,440.00
लाभ				4,252.00
दिहाड़ी (प्रति दिन)				425.20

समुदाय का संगठन

प्रदान का भरोसा रहा है कि लोगों की प्रगति उनके अपने हाथों में होती है। इसलिए, ज्यादा से ज्यादा गांववालों को लाख के कीड़े पालने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके, उसके लिए किसानों के बीच से ही लोकल रिसोर्स पर्सन (एलआरपी) और ब्रूड (बीहन) इंस्पेक्टर को चुना जाता है। ये एलआरपी और ब्रूड इंस्पेक्टर खुद किसान होते हैं, जिनमें दूसरों की मदद करने की क्षमता होती है। इन लोगों को चुनने की एक पूरी प्रक्रिया होती है। वे सभी युवा किसान जो अपने जैसे दूसरे किसानों का मार्गदर्शन करना और गंभीरता से अपनी जिम्मेदारी लेना चाहते हैं, उनका लिखित टेस्ट और इंटरव्यू लिया जाता है। इस पूरी प्रक्रिया का मकसद होता है एलआरपी और ब्रूड इंस्पेक्टरों को अपनी जिम्मेदारी के लिए पूरी तरह तैयार करना, जो जमीन पर गरीब किसानों की जीवनशैली में सार्थक और लंबे सुधार के प्रदान के फलसफे में यकीन करें।

नई दिशा की ओर

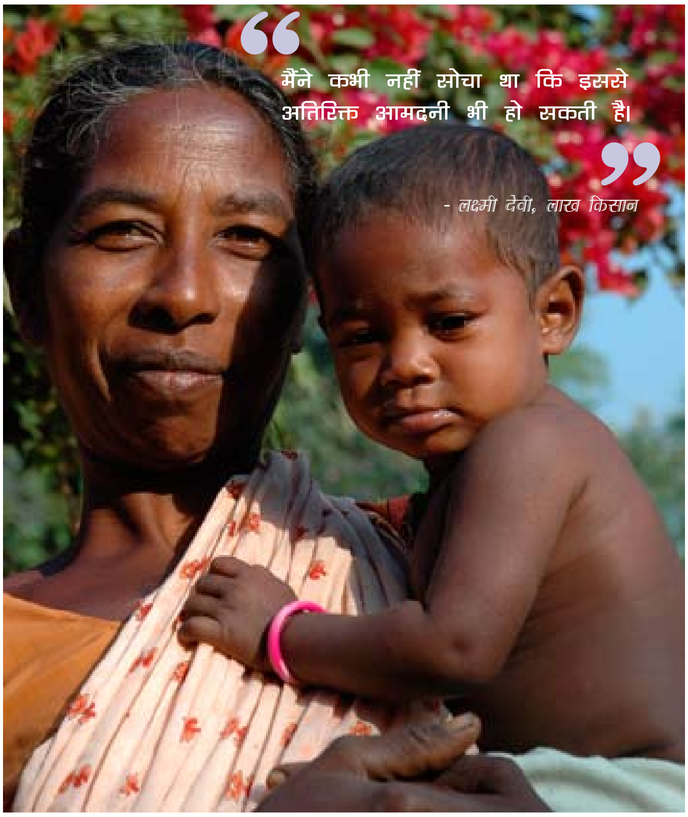

खूंटी जिले के निचितपुर रायडीह गांव की लक्ष्मी देवी में अब भरपूर आत्मविश्वास नजर आता है। उनका ये आत्मविश्वास दरअसल उनकी आमदनी से आता है। उनकी सालाना आमदनी 32,000 रुपए है जिसमें 14,000 रुपए लाख से मिले हैं। लक्ष्मी कहती हैं, "मेरे पास लाख के करीब 50 पोषक वृक्ष है, लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि इससे अतिरिक्त आमदनी भी हो सकती है। हम आदत और परंपरा के मुताबिक लाख की खेती करते रहे और कभी इससे जुड़े सभी पहलुओं के बारे में नहीं सोचा। एक दिन प्रदान के दादा लोगों के साथ हमारे स्वयंसहायता समूह की बैठक हुई, जिसमें उन्होंने हमें लाख की वैज्ञानिक खेती के बारे में बताया। मेरी दिलचस्पी बढ़ी और तब से मैंने मुड़कर नहीं देखा।"

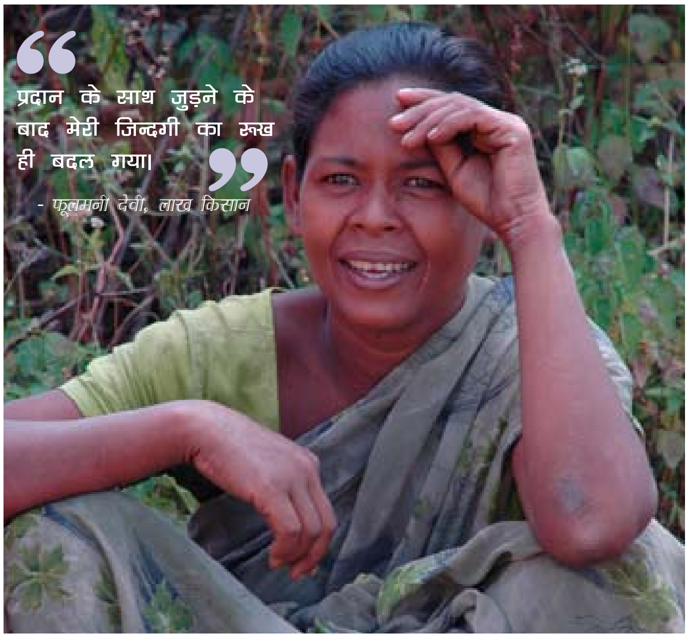

पूरे दिन की मेहनत के बाद भी फूलमनी देवी के चेहरे पर मुस्कान कायम है। उनके लिए दिन आसान नहीं रहा। घर का काम-काज, मवेशियों की देखभाल - सब उनकी जिम्मेदारी है। लेकिन शाम को अपने पड़ोसियों के साथ नायलान जालियों में बीहन की पैकिंग के लिए बैठते हुए उनकी थकान एकदम गायब हो जाती है। अगले दिन ही बीहन चढ़ाना है, इसलिए महिलाएं बीहन को काटने और उसे जालियों में बांधने में व्यस्त हैं।

तेजी से अपना काम करते हुए फूलमनी देवी कहती हैं, "आर्थिक रूप से सक्षम होना तो दो साल पहले हमारे लिए एक सपने जैसा था। हमने भले पीढ़ियों से लाख की खेती की हो, लेकिन मेरे पति के गुजरने के बाद लाख में निवेश करने के लिए मेरे पास ना समय था ना हिम्मत। लेकिन प्रदान के साथ जुड़ने के बाद मेरी जिन्दगी का रुख ही बदल गया।" फूलमनी देवी अब लाख से 20,000 रुपए कमाती हैं। एक ऐसी महिला के लिए, जिनके लिए अपने बच्चों का पेट भरना ही मुश्किल था, ये किसी बड़ी उपलब्धि से कम नहीं।

फूलमनी की पड़ोसी कृपा टूटी का अनुभव भी कुछ ऐसा ही रहा है। कृपा बताती है कि वैज्ञानिक तरीके से खेती करने के बाद दो साल में ही उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार आया है। वो कहती हैं, "अपने स्वयंसहायता समूह की मदद से ही मुझे सफलता मिली, क्योंकि मुझे यहीं वैज्ञानिक तरीके के बारे में पता चला। जब हमारे पास बीहन खरीदने के लिए पैसे नहीं थे, तो हमारे समूह से ही हमें मदद मिली। अपने समूह के बाकी सदस्यों के साथ मैंने लाख के कीड़े पालने का वैज्ञानिक तरीका सीखा। किसी भी मुश्किल के समय हमारा समूह ही हमारी मदद करता रहा।" अब कृपा लाख से साल के 20,000 रुपए कमाती हैं और उन्होंने सभी उधार भी चुकता कर दिए हैं। कृपा अब लाख के और पोषक वृक्ष लगाने की सोच रही हैं।

ऐसे कई प्रेरणादायक उदाहरण हैं, जिससे आस-पास के गांवों में वैज्ञानिक तरीके से लाख की खेती में किसानों की दिलचस्पी बढ़ी है। कई स्तरों पर खतरों के कम हो जाने से लाख अब 2,000 से ज्यादा किसानों के लिए आजीविका का मजबूत जरिया बन सका है। उचित मार्गदर्शन और कम कीमतों पर मिलनेवाली सुविधाओं की वजह से किसानों की खेती के तरीके में सुधार आया है। खूंटी जिलों के किसानों को हुए फायदे और अच्छे नतीजों से प्रेरणा लेकर खूंटी जिले के प्रदान कार्यकर्ता अब बांकुड़ा और पुरुलिया (पश्चिम बंगाल), पूर्वी सिंहभूम, दुमका, गोड्डा और पश्चिम सिंहभूम (झारखंड) के लाख कार्यक्रमों में किसानों की मदद कर रहे हैं।

भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान के सहयोग से प्रदान की ओर से एलआरपी के लिए एक हफ्ते के प्रशिक्षण की व्यवस्था कराई जाती है। इससे युवाओं के बीच ना सिर्फ ज्ञान का प्रसार होता है, बल्कि बाकी किसानों को भी खेती के दौरान ही प्रशिक्षण मिल जाता है।

अक्टूबर आते ही हुडुवा गांव की जोसफिन लिंडा की जिन्दगी अचानक बेहद व्यस्त हो जाती है। कटने के लिए तैयार रंगीनी चक्र की अपनी कतकी फसल की देख-रेख के अलावा जोसफिन बाकी किसानों को अगले चक्र के लिए लाख की कटाई और बीहन चढ़ाने के लिए तैयार करती हैं। जोसफिन में आत्मविश्वास कूट-कूट कर भरा है। उनकी जिम्मेदारियां कई हैं। इलाके के पाषक वृक्षों की ठीक से छंटाई, किसानों को वक्त पर बीहन दिलवाना और जालियों में बांधने के बाद ही पेड़ पर चढ़ाना – ये सब देखना जोसफिन का ही काम है।

जोसफिन कहती हैं, "मेरा ये आत्मविश्वास प्रदान की ही देन है। मैं अब दो मकसद के साथ काम करती हूं – पहला, लाख से अच्छी कमाई करना और अपने परिवार की ठीक से देखभाल, और, दूसरा, अपने जैसे किसानों को वैज्ञानिक खेती के लिए प्रोत्साहित करना।"

लेकिन जोसफिन हमेशा से ऐसी नहीं थी। पांच साल पहले रांची के निर्मला महिला कालेज से बी.ए. करने के बाद वो अपने दूसरे साथियों की तरह शहर जाकर नौकरी नहीं करना चाहती थी। लाख के कीड़े पालना पीढ़ियों से उनके परिवार की आमदनी का मुख्य जरिया था। लेकिन पिछले कुछ सालों से अच्छी फसल के अभाव के कारण जोसफिन अपने पुश्तैनी काम में वापस नहीं जाना चाहती थीं। उनके गांव और आस-पास के कई परिवारों ने लाख की खेती को पूरी तरह छोड़ दिया था और नई आजीविका की तलाश में शहरों की ओर चले गए।

अगर जोसफिन प्रदान के कार्यकर्ताओं से नहीं मिली होती तो शायद उन्होंने भी शहर का ही रुख किया होता। लेकिन तब बाकी किसानों और कार्यकर्ताओं से बातचीत के दौरान उन्हें अहसास हुआ कि उनकी खेती के तरीके में आखिर क्या गलतियां थीं। लेकिन जोसफिन सुधार लाने को तैयार थी, और कुछ ही महीनों में उन्हें नतीजे दिखाई देने लगे।

जोसफिन बताती हैं, "मैंने वैज्ञानिक खेती के एक-एक कदम को लिखकर रखा था। मैं कहीं भी गलती नहीं करना चाहती थी। दादा लोग की बात मानकर मैंने बेर पर कुसुमी लगाया। पहले ही प्रयोग में मुझे बीहन से चार गुना ज्यादा लाख मिला। मेरी पहली कमाई 2,500 रुपए थी, जिससे मुझे बहुत आत्मविश्वास मिला और मैं एक बार फिर गंभीरता से लाख की खेती करने लगी।"

ये तो एक शुरूआत भर थी। दूसरों की मदद करने में जोसफिन की दिलचस्पी देखकर प्रदान की ओर से उन्हें एक हफ्ते के प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। तब से जोसफिन दूसरे किसानों को वैज्ञानिक खेती की बारिकियां सिखाने में लगी हैं।

छंटाई, बीहन काटने, जालियों में पैकिंग कर सही तरीके से बीहन चढ़ाने से लेकर तैयार लाख की सही कटाई – जोसफिन अपने साथी एलआरपी के साथ हमेशा गांववालों की मदद के लिए तैयार रहती हैं। वो अब उत्साह के साथ वैज्ञानिक तरीके से खेती की वकालत करती हैं और दूसरे किसानों को प्रशिक्षण देने के लिए दूसरे गांवों में भी जाती हैं।

इनमें से कुछ एलआरपी ब्रूड इंस्पेक्टर हैं जिन्हें बीहन के चुनाव और उसका अनुमान लगाने के लिए प्रशिक्षित किया गया है। पेड़ों पर बीहन चढ़ाने से पहले ये बीहन की जांच करते हैं, जिससे उत्पाद की मात्रा और गुणवत्ता का अंदाज मिलता है।

खूंटी जिले में अभी 62 एलआरपी काम कर रहे हैं, जिनमें 20 ब्रूड इंस्पेक्टर हैं। इन एलआरपी और ब्रूड इंस्पेक्टरों को अपने काम के आधार पर पैसे दिए जाते हैं। एक एलआरपी पर पांच गांवों के 50 परिवारों की जिम्मेदारी होती है और एक फसल-चक्र के दौरान उन्हें करीब 8,000 रुपए मिलते हैं।

भविष्य की ओर

अधिक से अधिक किसान अब वैज्ञानिक खेती करने का उत्साह दिखा रहे हैं और प्रदान की कोशिश इस पूरी प्रक्रिया को और प्रभावी और अचूक बनाने की है। लाख किसानों को ऐसे कई कारणों का सामना करना पड़ता है जो उनके नियंत्रण से बाहर होता है, जैसे मौसम का बदलना या फिर अत्यधिक गर्मी या ठंड। इन समस्याओं से जूझने के लिए प्रदान ने भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान के साथ मिलकर गर्मी के दौरान एग्रो-ग्रीन नेट रूफ से ढंककर लाख के पोषक वृक्षों पर कीड़े पालने का प्रयोग शुरू किया है। कैलिएन्ड्रा और पीजन पी (अरहर) जैसे नए पोषक पौधों पर कीड़े पालने के लिए शोध किए जा रहे हैं। ये पौधे आकार में छोटे होते हैं और अपने घर के बगीचों में ही लगाए जा सकते हैं। इसके अलावा बीमारियों, गर्मी से होनेवाली मौत जैसी समस्याओं से अबतक नहीं निपटा जा सका है। इसके लिए भी शोध करने की जरूरत होगी।

लाख की कीमतें पूरी तरह बाहर के बाजारों पर निर्भर हैं, इसलिए उसमें उतार-चढ़ाव प्रदान के नियंत्रण से बाहर है। पिछले सालों में कच्चे लाख की कीमतें गिरी हैं, जिससे किसानों को लाख की खेती पूरी तरह छोड़ना पड़ा। प्रदान लाख के किसानों की को-आपरेटिव शुरू करने की ओर प्रयासरत है। ये को-आपरेटिव बीहन हासिल करने, मार्केटिंग, उत्पाद रखने और गुणवत्ता को नियंत्रित करने जैसी कई जिम्मेदारियां संभालेगी। इस को-आपरेटिव का इस्तेमाल प्रशिक्षण देने, सूचना का आदान-प्रदान करने, मार्केटिंग और प्रोसेसिंग की सुविधाएं उपलब्ध कराने वाली

उत्पादकों की भूमिका के केन्द्रीकरण के लिए नयी मूल्य श्रृंखला

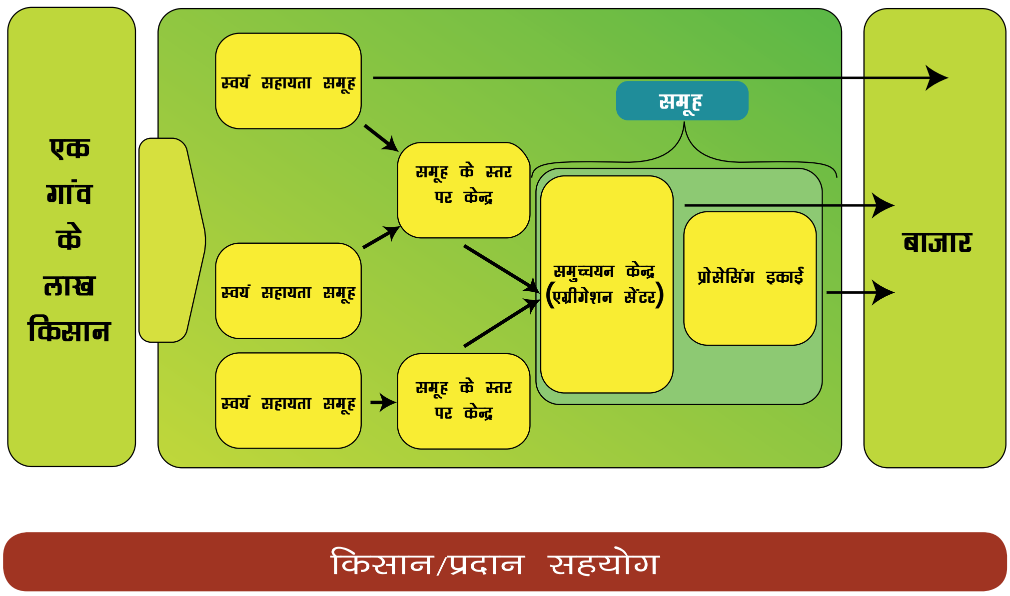

सुविधाओं से किसानों को जोड़ने के लिए किया जाएगा। ये संस्थान उतरती-चढ़ती कीमतों से किसानों को बचाने का काम भी करेगी।

लाख किसानों को को-आपरेटिव से जोड़ने का सबसे बड़ी फायदा होगा कि इससे किसानों को बिचौलियों से बचाकर उन्हें सीधा बाजार से जोड़ा जा सकेगा जिससे किसानों को उनके उत्पाद के लिए अच्छी कीमतें मिलेंगी। अपने प्रशिक्षित युवा कार्यकर्ताओं के सहयोग से को-आपरेटिव उन्हें लाख की छंटाई और ग्रेडिंग का काम भी सिखा सकेगा। इससे किसानों को लाख में मौजूद राल की मात्रा के आधार पर उन्हें उचित कीमतें मिल सकेंगी। इससे ना सिर्फ किसानों को सही मजदूरी मिलेगी, बल्कि व्यापारियों को अच्छा माल भी मिलेगा। गरीब आदिवासी किसानों के हितों की रक्षा के लिए प्रदान झारखंड राज्य सहकारिता लाख मार्केटिंग और खरीद संघ (झारखंड स्टेट को-आपरेटिव लैक मार्केटिंग एंड प्रोक्योरमेंट फेडरेशन) जैसी एजेंसियों के साथ किसानों को जोड़ने की कोशिश कर रहा है।

ये को-आपरेटिव किसानों को उनके दरवाजे पर ही एलआरपी की प्रशिक्षित टीम के द्वारा स्टाक मैटिरियल, नायलान की जाली, स्प्रेयिंग मशीन, छंटाई के लिए दौली जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराएगी।

इलाके में एक बार लाख के उत्पादन में स्थिरता आ जाए तो प्रदान लाख के क्षेत्र में सेमी-प्रोसेसिंग की पहल शुरू करने का विचार रखता है ताकि झारखंड के किसानों को लाख से आय का एक नियमित जरिया मिले। लाख के किसान अपने गांव में ही यदि सेमी-प्रोसेसिंग भी कर सकें तो इससे कई किसानों को रोजगार मिलेगा। गांव के स्तर पर ही मूल्य श्रृंखला (वैल्यू चेन) सुदृढ़ करने के लिए किसानों को प्रोसेसिंग और मार्केटिंग के चरणों से भी जोड़ना होगा ।

आगे का रास्ता भले ही लंबा दिखता हो, लेकिन कई किसान इस सफर को तय करने के लिए तैयार हैं। उनमें से एक हैं सुंदर पाहन, जो पूरी प्रक्रिया को संक्षिप्त शब्दों में समेटते हुए कहते हैं, "बिना शहर गए अपने लिए एक अच्छी जिन्दगी जीना, अपने बच्चों को अच्छा भविष्य देना और लाख के बारे में हर नई चीज सीखना, मेरी जिन्दगी का यही मकसद है।" और लाख के हजारों रंग को समेटे ये सपने धीरे-धीरे ही सही, लेकिन हकीकत में बदलने लगे हैं।

लाख छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा और असम में रहनेवाले हजारों गरीब आदिवासी परिवारों की आजीविका का मुख्य जरिया है। दुनिया भर में आज लाख उत्पादन और आपूर्ति के बीच 10,000 मेट्रिक टन का अंतर है, जिसे पूरा किया जाए तो लाख तकरीबन एक लाख परिवारों की आजीविका का साधन बन सकता है। प्रदान झारखंड के 2,500 परिवारों के साथ मिलकर लाख को उनकी आजीविका का एक मजबूत साधन बनाने की ओर अग्रसर है। झारखंड में लाख उत्पादन को स्थिर करने के लिए प्रदान झारखंड राज्य लाह विपणन एवं आहरण सहयोग सहकारी संघ (झास्कोलाम्फ) और भारतीय राल एवं गांद संस्थान जैसी संस्थाओं के साथ मिलकर काम कर रहा है।

प्रदान एक ऐसी स्वयंसेवी संस्था है जो असम, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, राजस्थान और पश्चिम बंगाल के ग्रामीण और गरीब परिवारों के साथ आजीविका के क्षेत्र में काम कर रही है। प्रदान गांव की गरीब महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों से जोड़कर उन्हें खेतों, जंगलों, मवेषियों और गांवों से जुड़े आजीविका से साधनों से जोड़ने की ओर काम करता है। प्रदान के 300 से ज्यादा कार्यकर्ता 170,000 गरीब परिवारों के साथ जुड़कर उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने की ओर कार्यरत हैं।

ये फिल्म आगा खान फाउंडेशन के सहयोग से यूरोपियन कमीशन के स्केल कार्यक्रम के तहत बनाई गई है।

आगा खान फाउंडेशन

(आगा खान फाउंडेशन के सहयोग से यूरोपियन कमीशन के स्केल कार्यक्रम का समर्थन)